अनुवाद क्या है?

- "अर्थ को बनाये रखते हुए अन्य भाषा में अन्तरण करना।"

  — ए0एच0 स्मिथ

- "अनुवाद की प्रक्रिया आत्मा के परकाय प्रवेश की तरह है।"

  — जी0 गोपीनाथन

- "अनुवाद प्रायोगिक भाषा विज्ञान की वह शाखा है जिसका सम्बन्ध प्रतीकों के एक सुनिश्चित समुच्चय से दूसरे समुच्चय में अर्थ के अन्तरण से है।" — डी0 स्टर्ट

- "मूल भाषा के सन्देश के समतुल्य संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया : पहले कथ्य और फिर कथन भंगिमा के स्तर पर निकटतम और स्वाभविक रूप में।" — नायडा और टेलर

अनुवाद के प्रकार

- रोमन याकोब्सन ने 03 प्रकारों में वर्गीकरण किया है :—

1. अन्तःभाषिक अनुवाद— किसी भाषा की एक प्रतीक व्यवस्था से दूसरी प्रतीक व्यवस्था में अर्थ का अन्तरण, जैसे प्रेमचन्द के आरंभिक उपन्यासों का उर्दू शैली से हिन्दी शैली में अनुवाद।
2. अन्तर भाषिक अनुवाद— एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था से दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था में अर्थ का अन्तरण।
3. अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद— भाषान्तर्गत प्रतीक व्यवस्था से भाषेत्तर या मिश्रित प्रतीक व्यवस्था में अन्तरण जैसे कहानी का रंगमंच, उपन्यास का फिल्मांकन।

अनुवाद का प्रतीक सिद्धान्त

- प्रतीक वह प्रस्तुत वस्तु है जो किसी अप्रस्तुत विषय का प्रतिनिधित्व उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है।
- प्रतीक की धारणा में तीन इकाईयाँ हैं– संकेतक, संकेतित और संकेत। संकेतित बाह्य जगत में स्थित इकाई है और संकेतक मन में स्थित उस इकाई की संकल्पना। वस्तु और प्रतीक के सम्बन्ध आरोपित हैं। अन्तर्निहित नहीं। इसलिए एक से अधिक प्रतीक व्यवस्थाओं में एक ही अर्थ की अभिव्यक्ति संभव है। यही अनुवाद की सम्भावना का आधार है।

अनुवाद का समतुल्यता सिद्धान्त

- कैटफोर्ड, नायडा और टेलर।
- माध्यम ही संदेश है। सन्देश का वास्तविक अन्तरण सम्भव नही।
- अनुवाद में संदेश का अन्तरण केवल आभासी सत्य। अनुवादक ऐसा छलिया है, जिस पर भरोसा किया जा सकता है।
- अनुवाद लक्ष्य भाषा में रचा गया एक सर्वथा भिन्न, नया और दूसरा ही संदेश होता है, जो मूल संदेश के समतुल्य होता है। यह समतुल्यता विविध स्तरों पर होती हैं।
- अनुवाद की मूल समतुल्यता सबसे पहले रूप गठन के स्तर पर और फिर अर्थ के भीतरी गतिशील स्तर पर कुशल अनुवादक साधता है।

साहित्यिक और सूचनापरक अनुवाद

- साहित्यिक अनुवाद कलापरक, आलंकरिक, निजतापरक, शिल्प तथा शैली से युक्त, जबकि सूचनापरक अनुवाद विज्ञानपरक एवं वस्तुनिष्ठ।
- साहित्यिक अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली महत्वहीन, जबकि सूचनापरक अनुवाद में अनिवार्य।
- साहित्यिक अनुवाद में कथनभंगिमा, रूपगठन, अनुभूति की सघनता, रागात्मकता तथा संवेदन वैशिष्ट्य का निर्वाह आवश्यक। सूचनापरक अनुवाद में तथ्य की रक्षा ही पर्याप्त।
- साहित्यिक अनुवाद में पुर्नसृजन की सम्भावना होती है। सूचनापरक अनुवाद मशीनों से भी सम्भव। पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद विज्ञान के सहारे सूचनापरक अनुवाद सीखना सम्भव, साहित्यिक अनुवाद नही।

अच्छा अनुवाद कैसे करें?

- अनुवादगत विषय का गम्भीर ज्ञान होना चाहिए।
- स्रोत और लक्ष्य भाषाओं पर अच्छी पकड़ हो।
- अभिव्यक्ति स्पष्ट हो।
- स्रोत भाषा के रूढ़ शब्दों का केवल लिप्यान्तरण कर दें, जैसे रजिस्टर, अरिस्टोटल आदि।
- कथनभंगिमा का यथा सम्भव निर्वाह हो। इसके लिए सन्देश को भाषा की गहन संरचना के स्तर पर पकड़ें।
- अन्त में एक बार पुनर्निरीक्षण अवश्य करें।

क्या समस्याएँ सामान्यतः आती हैं?

- कई बार एक ही शब्द अलग–अलग भाषाओं में अलग–अलग अर्थ में प्रयुक्त होता है। इनके प्रयोग में सावधानी आवश्यक है।
- पर्याय शब्दों में से सटीक शब्द का चयन।
- क्रियापादों आदि के रूपचयन की कठिनाई।
- वचन और लिंग की समस्या।
- मुहावरों–कहावतों का सामान्तर खोजने की समस्या।
- नादसौन्दर्य की रक्षा की कठिनाई, ध्वनियों के हिन्दीकरण की कठिनाई।
- अलंकारों के अनुवाद की कठिनाई।
- शैली और भंगिमा की रक्षा की कठिनाई।
- भाषा के परिवेश और प्रसंग को ग्रहण करने के लिए कल्पनाशीलता।